# स्तुति

---

---

तर्ज़– दर ते सवाली आया ... ...

सदके गुरां तो जावां, बलिहार गुरां तो जावां ।। टेक।।

मैं मांगत ऐह मेरा दाता, जन्म –जन्म दा साक पछावा।
सबनूं आख सुनावां , बलिहार ... ...

सत्गुरु दीना नाम अमोला, दिल दी तकड़ी धर मैं तोला।
घट – घट दर्शन पावां , बलिहार ... ...

सेवा टहल करां होए गोली, सारी जान सदकड़े घोली।
हुण की वसत छुपावां , बलिहार ... ...

क्या कछु वारां कुछ नहीं मेरा, तन – मन – धन है सत्गुरु तेरा।
देंदा वी शरमावां , बलिहार ... ...

भटक – भटक कर मलेया द्वारा, सत्गुरु दीना चरण सहारा।
" दासनदास " कहावां , बलिहार ... ...

---

---

तर्ज़– सबनां देशां अंदर ... ...

सोहणां मुखड़ा प्रीतम दा, सोहणां मुखड़ा प्रीतम दा, वांग महताब दिसदा ऐ।
दिल दे गुलशन अंदर , दिल दे गुलशन अंदर , फुल गुलाब दिसदा ऐ।। टेक।।

सूरज अंदर तपश घनेरी, पर जग रोशन करदा।।
इस मुखड़े दी शीतलताई, देख्यां हिरदा ठरदा।।
मेरी ज़िंदगी दा कारन, ऐही जनबा दिसदा ऐ, सोहणां ... ...

दर्शन करके प्रीतम वाला, जग दी सुध बुध भुलदी।
हिरदे अंदर जाके देखो, प्रेम दी तकड़ी तुलदी।।
ऐ जग सारा मैंनू वांग हबाब दिसदा ऐ, सोहणां ... ...

एक– एक रोम चमकदा ऐवें, ज्यूं सूरज दीयां किरनां।
दर्शन कर मन मस्त होंवदा रह गया टुरना फिरना।।
ऐ सुख विषयां वाला,वांग ख्वाब दिसदा ऐ, सोहणां ... ...

" दास "कहे सतगुरु दा मेरा, रिश्ता हो गया पक्का।
धर्मराज जब बात सुनी तो, रह गया हक्का – बक्का।।
लेखा उसदा मेरा, साफ़ हिसाब दिसदा ऐ, सोहणां ... ...

तर्ज़– तेरे दर्शन नूं महाराज आज सब संगत आई होई ए ... ...

धर युग – युग में अवतार, भक्त के कारण आते हैं।
कर खलन दलन सिंघार, भूमि का बोझ उठाते है।। टेक।।

जब प्रेम से भक्त पुकारा, तब नरसिंह रूप को धारा।
आ भक्त का कष्ट निवारा, दुष्ट को मार मुकाते हैं, धर ... ...

फिर त्रेतायुग में आये, खल मारन बन को धाये।
जिस प्रेम के फंदे पाये, बेर भीलनी के खाते हैं, धर ... ...,

भक्तों के वश भगवाना, घर साग बिदुर के खाना ।
कभी पहन नाई का बाना, भूप के चरण दबाते हैं, धर ... ...

कुब्जा ने हार बनाके, गल प्रेम के फंदे पाके।
कभी भरी सभा में आके, लीर से चीर बढ़ाते हैं, धर ... ...

जिन प्रेम किया तिन पाया, भगवन को पास बुलाया।
कह " दासनदास " सुनाया, प्रेम वश प्रभु को पाते हैं, धर ... ...

तर्ज़ – भैरवी तेरे दर्शन नूं महाराज ... ...

मेरे सत्गुरु स्वामी संत, अंत तेरा किसे ना पाया है।। टेक।।

तू जो चाहे है करदा, सब जगत है तेरा बरदा।
जो तेरे मेरे विच पर्दा, न जाने किसने पाया है, मेरे ... ...

तू रुठड़े पया मनावें, किते मनदे पया रुसावें।
तेरा ऋषि – मुनि यश गावें, प्रभु तेरी अचरच माया है, मेरे ... ...

इक पल विच जगत रचाना, रच – रच के फेर मिटाना।
जिस मनेया तेरा भाणा, ओही जग सफला आया है, मेरे ... ...

कहे " दास " बिना तेरी मरज़ी तुझे कठिन जानना हर जी।
बिन तेरे जगत है फ़रज़ी, खेल तू अज़ब रचाया है, मेरे ... ...

तर्ज़ – सबनां देशां अंदर ... ...

क्या गुण गावां तेरे, क्या गुण गावां तेरे,मेरे दातार सत्गुरु जी।
भुल बख़्शावां तैथों, भुल बख़्शावां तैथों, बख्शनहार सत्गुरु जी ।। टेक।।

दयाल देश से आकर सत्गुरु , संत रूप को धारा ।
शरणागत को शरण में भव जल पार उतारा।।
साचा मैंने देखा तेरा दरबार सत्गुरु जी , सत्गुरु ... ...

घोर कलु में आकर सत्गुरु सत् मार्ग दिखलाया।
निज आत्म को पाने खातिर, सहजे ध्यान बताया।।
देखा त्रिकुटी अंदर जोत चमकार दाता जी, सत्गुरु ... ...

जो मार्ग बतलाया सत्गुरु, देख लिया वहां जाके।
सुन समाधि लगी घट अंदर, अपना आप भुला के।।
मीठी धुन से खड़की, निराली तार दाता जी , सत्गुरु ... ...

राम – नाम धन बख़्शन हारे, बख़्शो प्रेम प्याला।
" दासनदास " तुम्हारा देखे, अंदरों रूप निराला।।
तेरे चरणां तों जावां, मैं बलिहार दाता जी, सत्गुरु ... ...

तर्ज़ – सत्गुरु प्यारे तेरे चरणां तो वारी हां ... ...

होया दीदार मैंनू साची सरकार दा।। टेक।।

मुखड़े दी छवि है न्यारी, लगदी है ऐनक प्यारी।
सिर दा रुमाल सोहणां, दिल नूं है ठारदा , होया ... ...

सुंदर चोले दा घेरा , छलदा है दिल जो मेरा।
पलंग सुनैहरी साजे, नक्शा गुलजार दा , होया ... ...

हार सुनैहरी डारे , मैंनू जो लग्गन प्यारे।
रूप अवतार सोहणां, मेरे दिलदार दा , होया ... ...

संगत है दर्शन करदी, होकर के सत्गुरु दे बरदी।
झलेया न जावे चानन, कोमल चरनार दा , होया ... ...

" दास " क्या महिमा गावे, कोई न पार पावे।
औगन तां बख्शो स्वामी, मैं गुनहगार दा , होया ... ...

गुरु चरणां दे नाल मन मेरा लगा रहे।। टेक।।

ऐ दुनियां दो दिन दा मेला, आखिर जाना आप अकेला ।
छड के सब धन माल, मन ... ...

हुन तां बनदे सारे सक्के, ऐ सक्के देंदे फिर धक्के।
जद आवे सिर काल, मन ... ...

ऐ सुख चार दिनां दा सारा, जन्म – मरण दा खेल पसारा।
छडके सबदा ख्याल, मन ... ...

सत्गुरु मेरा साचा साथी, वेद कतेब सुनांदे साखी ।
झूठा जग जंजाल, मन ... ...

झाड़ू फेरा पानी ढोवां, तूं स्वामी में चाकर होवां।
सुनो मेरे कृपाल, मन ... ...

सच्चे मात पिता गुरु स्वामी, " दास " होए मैं करां गुलामी।
टुटे माह दा जाल, मन ... ...

कृपा करके सत्गुरु पूरे, मैंनूं आन बचाया है।
रुडदा बेड़ा ग़ोते खांदा, आके पार लगाया है।। टेक।।

मेरा मन लोचे बुरयाइयां, चालां इस अवल्लियां चाइयां।
सत्गुरु करके माफ़ ख़ताइयां, इस नूं रस्ते लाया है, कृपा करके ... ...

मेरे सत्गुरु कृपा कीनी, माला दो मनके की दीनी ।
मेरी सुर्ति भई लिव लीनी, ऐसा शब्द बताया है, कृपा करके ... ...

जां मैं झाती अंदर मारी, देखी फिर मैं खेल न्यारी ।
ओत्थे पई चमक इक भारी, मेरा मन तृप्ताया है, कृपा करके ... ...

उठी फेर सुरीली तान, उसनूं कीवें करां ब्यान।
जावां सत्गुरु तों कुरबान, अनहद नाद बजाया है, कृपा करके ... ...

" दासनदास " सदकड़े जावां, ऐसे गुरु दी सेव कमावां ।
दर्शन करके आनंद पावां, पूरा गुरु प्रगटाया है, कृपा करके ... ...

तर्ज़– बंसरी, बंसरी, बंसरी

सत्गुरु, सत्गुरु, सत्गुरु, सत्गुरु,।। टेक।।
मेरे दिल का सहारा प्यारा गुरु,
मेरी आँखों का तू ही है तारा गुरु।
तू ही डुबदे नूं आन उभारा गुरु,
मैं भिखारी सदा इक दाता है तू सत्गुरु ... ...

अर्ज करता हूं दो हथ जोड़ प्रभु ,
मैंनूं बख्शो ध्यान ऐही लोड़ प्रभु।
पूरी होवे जो मेरी है थोड़ प्रभु ,
वक्ते आखिर हो दिल में यहीं जुस्तजू , सत्गुरु ... ...

तेरे चरणों में मेरा ध्यान रहे,
मोहनी मूरत का आगे निशान रहे,
दिल जुबा पे तेरा गुण–गान रहे,
अगर होवे तो होवे गुफ्तगू , सत्गुरु ... ...

तेरे चरणों का " दासनदास " हूं मैं,
तेरे देखे बिना तो उदास हूँ मैं।
तेरे चरणों में चाहता निवास हूँ मैं,
पूरी करदे ऐ दाता मेरी आरजू , सत्गुरु ... ...

तर्ज़ – करन नसीबां वाले सत्संग ... ...

बड़े भाग कर पाईये संगत सत्गुरु दी।। टेक।।

गुरु की संगत पारस जानो, निज करतूति लोहे समानो।
भवसागर तर जाईये, संगत ... ...

निशदिन गुरु की सेव कमाना, पानी ढोना ' अमर ' कहाना।
निर्लज्ज चाहे कहलाईये, संगत ... ...

' रामदास ' गुरु राम पछाता, सच्चे गुरु से सांचा नाता।
अपना मान गवाईये, संगत ... ...

जनकपुरी में राम पग धारा, गुरु सेवा में वक्त गुज़ारा।
राम चरण चित्त लाईये, संगत ... ...

सत्गुरु सत्मार्ग दर्शावे, राम रूप घट में प्रगटावे।
त्रिकुटि दर्शन पाईये, संगत ... ...

" दासनदास " मिले गुरु पूरे, घट में बाजे अनहद तूरे।
शब्द में सुर्त समाईये, संगत ... ...

तर्ज़– गम दिए मुस्तकिल ... ...

उठे बैठे गुरु, सोये जागे गुरु –गुरु जपना ।
दुनिया धंधे न कर– कर खपना ।। टेक।।

एक वाली है सत्गुरु प्यारा, ले – ले दिल से इसी का सहारा।
दुनिया दिन चार है, झूठी बहार है, इक कल्पना ,दुनिया ... ...

ख़्याल ग़ैरो के दिल से हटा ले, मन मंदिर में सत्गुरु बसा ले।
बन जाए गुरु का भवन, मेटे आवागमन , रहे भटकना, दुनिया ... ...

भोग दुनिया के भोगने वाले, आखिर हो गए वो काल हवाले।
जो थे मालिक महल, एक लागा न पल हुआ सपना, दुनिया ... ...

मन को समझा ले " दासनदासा " राखो सत्गुरु पे इक भरवासा।
आस जग की तजो, मन में गुरु – गुरु भजो, वही अपना, दुनिया ... ...

गुण गावां नित तेरे जी सत्गुरु प्यारेया।। टेक।।

दीनदयाल दया के सागर, तेरा नाम त्रिलोक उजागर ।
जुग – जुग पावीं तू फेरे, जी ... ...

मैं गुणहीन कपट छल भरया, परम पिता तेरे दर पर पड़या।
मैं विच दोष घनेरे, जी ... ...

तुद बिन मेरा कौन है स्वामी, शरण में राखो अन्तर्यामी।
करयो न मूल प्रेरे, जी ... ...

सेवा तेरी मूल न जानी, मैं मतिमंद अति अज्ञानी।
देखो न अवगुण मेरे, जी ... ...

चंगी – मन्दी तैं दर आईयां," दासनदास " दियां बख़्श ख़ताईयां।
साचे साहिब मेरे, जी ... ...

तेरी तस्वीर में सत्गुरु अजब तासीर देखी है।
दिलों को खैंचने वाली प्रेम जंजीर देखी है।।

जो श्रद्धा प्रेम से आकर करे इक बार यह दर्शन।
बने तस्वीर हैरत वह कि जिस तस्वीर देखी है।।

जो तेरा बन चुका दिल से निकाले ख़्याल गैरों के।
बनी पल में बिगड़ी उनकी तक़दीर देखी है।।

जन्म – जन्मों के संशय रोग आदि दूर करने को।
तेरे उपदेश सुंदर की अजब अक्सीर देखी है।।

बना जो " दास " दुनिया का छोड़कर आस तेरी को।
रहा न इस न उस जग का यही आख़ीर देखी है।।

तर्ज़ – पाके नाम वाली डोर ... ...

सत्गुरु दे हथ डोर, मनुवा डोल न जांवीं ।
डोल न जांवीं गुरु गुण गांवीं ।। टेक।।

इक उत राखा सत्गुरु तेरा, बन जा गुरु चरणन दा चेरा।
आस रक्ख़ी न होर, किधरे दिल न फसावीं , सत्गुरु ... ...

जो जन गुरु चरणां दे चेरे, ओहना ताईं यम दण्ड न घेरे।
हर तरफ़ों मुख़ मोड़, चित्त चरणां विच लावीं, सत्गुरु ... ...

राम , कृष्ण , गुरु सेव कमाई, मर्यादा सब ताहीं सिखाई।
लोक – लाज सब छोड़, गुरां दी सेव कमावीं, सत्गुरु ... ...

छोड़ जगत दी झूठी आसा, अर्ज करे यह " दासनदासा " ।
मान दी मटकी फोड़, गुरां दा दास कहावीं, सत्गुरु ... ...

मैं तेरी हो मुकियां मेरेया साहिबा वे।। टेक।।

मैंनू न विसरी तूं मैंनू मेरे साहिबा, हर गल्लों मैं चुकियां , मेरेया ... ...

जे इक नज़र मेहर दी भाले, मैं चढ़ चुबारे सुत्तियां , मेरेया ... ...

होर नहीं कुछ लोड़ मैंनू , दर्स तेरे दी भुखियां, मेरेया ... ...

रात दिन मैंनूं तांग है तेरी, हिज्र तेरे विच सुकियां, मेरेया ... ...

औगणहार मैं गुण नहीं कोई, बख्श लवे तां मैं छुट्टिया, मेरेया ... ...

" दासनदास " नूं दर्स दिखादे, होवन लख – लख खुशियां, मेरेया ... ...